

टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे
संस्कृत पारंगत (एम्.ए.) नियमित
परीक्षा: डिसेंबर - २०२३
सत्र १ ले

विषय: सामान्य व्याकरण (22R311)

दिनांक: ०६/१२/२०२३	गुण : ६०	वेळ : स. १०.०० ते १२.३०
सूचना: १) उजवीकडील अंक त्या प्रश्नांचे गुण दर्शवितात. २) सर्व प्रश्न सोडवणे अनिवार्य.		

प्र.१. उचिततमं पर्यायं चिनुत। (०६)

- | | | | | |
|--|-------------------|------------------|-------------|-------------|
| १. सज्जना: सद्ग्रन्थानां श्रवणमनने | आ) विधत्ते | आ) विधाते | इ) विधाति | ई) विधधते |
| अ) विधत्ते | आ) विधाते | इ) विधाति | ई) विधधते | |
| २. यशः + इच्छति | आ) यशोच्छति | आ) यशोच्छति | इ) यशाच्छति | ई) यशोच्छति |
| अ) यश इच्छति | आ) यशोच्छति | इ) यशाच्छति | ई) यशोच्छति | |
| ३. नामन् शब्दस्य पञ्चमीविभक्तिः | आ) नामा | आ) नाम | इ) नामाम् | ई) नामः |
| अ) नामा | आ) नाम | इ) नामाम् | ई) नामः | |
| ४. कयोश्चिद् | स्पष्टीकरणं लिखत। | | | |
| अ) द्वे | आ) द्वाभ्यां | इ) द्वयोः | ई) द्वौ | |
| ५. स्वाहा। | | | | |
| अ) अग्निः | आ) अग्निना | इ) अग्रये | ई) अग्रे: | |
| ६. भवान् गच्छति इति वाक्यं | आ) अशुद्धम् | इ) शुद्धाशुद्धम् | ई) केवलम् | |

प्र.२. द्वयोः माध्यमभाषया अनुवादं कुरुत। (१२)

१. मातेव रक्षति पितेव हिते नियुद्धते कान्तेव चाभिरमयत्यपनीय खेदम्।
 कीर्ति च दिक्षु विमलां वितनोति लक्ष्मीं किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या॥।
२. आयाति याति पुनरेव जलं प्रयाति पद्माङ्कुराणि विचिनोति धुनोति पक्षौ।
 उन्मत्तवद् भ्रमति कूजति मन्दमन्दं कान्तावियोगविधुरो निशि चक्रवाकः॥।
३. को वीरस्य मनस्विनः स्वविषयः को वा विदेशस्तथा यं देशं श्रयते तमेव कुरुते बाहुप्रतापार्जितम्।
 यददंष्ट्रानखलाङ्गुलप्रहरणैः सिंहो वनं गाहते तस्मिन्वेव हतद्विपेन्द्रुधिरैस्तृष्णां छिनत्यात्मनः॥।

प्र.३. एकमधिकृत्य संस्कृतेन निबन्धं लिखत। (१५)

१. कः परः प्रियवादिनाम्?
 २. संस्कृतभाषायाः महत्वम्।
 ३. देशाटनम्।

प्र.४. सूचनानुसारम् उत्तरत। (१५)

- अ) समासविग्रहं कृत्वा नामानि लिखत। (चतुर्णाम्)
- | | |
|----------------------|--------------|
| १. सुखशान्तिसमृद्धयः | २. यमुनातटम् |
| ३. प्रसन्नवदनाः | ४. परमादरः |
| ५. प्रकृतिसिद्धम् | ६. आपद्गतः |

आ) रूपाणि लिखत। (चत्वारि) (०४)

- | | | |
|------------|------------|------------|
| १. हन्यात् | २. महिमा | ३. भवितुम् |
| ४. जनयति | ५. पशूनाम् | ६. प्रयुः |

इ) संस्कृतेन अनुवदत। (किमप्येकम्)

(०७)

१. गौतमी नावाची एक म्हातरारी विधवा स्त्री मुलाबरोबर वनात गेली. तिथे शांती मिळवून कंदमुळे इत्यादीचे भोजन करीत तप करू लागली. एके दिवशी मुलाला आश्रमात सोडून कोणत्यातरी कामासाठी बाहेर गेली. तेव्हा अचानक कोणता तरी कृष्णर्सप्य येऊन त्याला चावला आणि तो मेला.
२. हे आप्रोद्यान आहे. इथे आप्रवृक्ष आहेत, ज्यांच्यावर उमललेल्या मंजन्या शोभतात. वसंतात मंजन्या उमलतात, मंजरींचा सुवास आकर्षक असतो व या मंजरींमधून फळे तयार होतात आणि पिकलेले आंबे गोड होतात. सुवासाने वेडावलेले भुंगे उपवनात येतात, मंजरींच्या वर फिरतात आणि गुंजारव करतात.

प्र.५. सूचनानुसारं परिवर्तयत। (केऽपि द्वादशा)

(१२)

१. वसन्तसमये अस्मिन् पीतानि पुष्टाणि जायन्ते। (एकवचने लिखत।)
 २. जने तन्मतम् अद्यापि प्रशस्यते। (प्रयोगपरिवर्तनं कुरुत।)
 ३. युधिष्ठिरः विजयं लेभे। (लङ्घकारे लिखत।)
 ४. विकसितानि कमलानि प्रतिभान्ति। (अधोरेखितस्य समानार्थकं लिखत।)
 ५. स्नेहपूर्णः दीपः उपाशाम्यत्। (लिट्लकारे लिखत।)
 ६. अहनि अहनि सञ्जीवकः गर्जति। (अधोरेखितपदस्य समस्तपदं लिखत।)
 ७. रामो मारीचं राक्षसं मारयित्वा स्वाश्रमं प्रत्यावर्तत। (त्वान्तं निष्कासयत।)
 ८. दशरथस्य पुत्रा आसन्। (चतुर इति सङ्ख्यावाचकस्य योग्यं रूपं लिखत।)
 ९. अहं सह न क्रीडिष्यामि। (युष्मद् सर्वनामः योग्यं रूपं लिखत।)
 १०. त्वया वचांसि श्रोतव्यम्। (अशुद्धिसंशोधनं कुरुत।)
 ११. पादपः वर्धते। (मुनिः इति कर्तृपदं योजयित्वा णिजन्तरचनां कुरुत।)
 १२. हतेषु देहेषु गुणाः धरन्ते। (सतिसप्तमीरचनां निष्कासयत।)
 १३. नरः निकृष्टतरः। (देव शब्दस्य योग्यं रूपं योजयत।)
 १४. गायिका नृपं गीतं श्रावयति। (णिजन्तरचनां निष्कासयत।)
 १५. अस्य नगरस्य अभितो वृक्षाः। (अशुद्धिसंशोधनं कुरुत।)
-